सम्पादकीय

देश - विदेश

राष्ट्रीय

कांग्रेस के मुद्दों से इंडिया गठबंधन के सहयोगी दल ही कांग्रेस से दूरी बना रहे हैं

विपक्षी गठबंधन इंडिया की उलटी गिनती का क्रम रूकने का नाम नहीं ले रहे हैं। दिल्ली, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल से आ रही खबरों से साफ होता है कि इंडिया गठबंधन इंडिया में सब कुछ सही नहीं चल रहा। लगातार चुनावी नाकामियों से पैदा हुई बेचैनी गठजो? पर भारी प? रही है। एक-दूसरे के खिलाफ असंतोष, दोषारोपण और बयानबाजी विपक्ष एकता के लिए बिल्कुल भी शुभ संकेत नहीं, जो गठबंधन की मुश्किलें ब?ने का ही सबब है। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के प्रभावी प्रदर्शन एवं परिणामों के कारण ही वह अधिकारपूर्वक इंडिया का नेतृत्व अपने हाथों में लेकर गठबंधन की अगुआई करने में सक्षम हो पायी। लेकिन कांग्रेस की ओर से ऐसी कोई मजबूत एवं प्रभावी पहल बाद में हुए हरियाणा, महाराष्ट्र, झारखण्ड, जम्मू-कश्मीर आदि प्रांतों के चुनावों में देखने को नहीं मिली, राज्यों के विधानसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन का हिस्सा होते हुए भी पार्टियों ने अपनी क्षेत्रीय जरूरत को सर्वोपरि रखते हुए फैसले लिए जो गठबंधन की प्रतिबद्धताओं पर प्रश्न लगाती है। अडाणी मुद्दे को लेकर शीतकालीन संसद सत्र में इंडिया गठबंधन में दरार दिखने लगी है। अडानी के मुद्दें पर कांग्रेस और राहुल गांधी लगातार संसद में हंगामा कर रहे हैं, सदन की कार्यवाही नहीं चल पाई है। वहीं, अडानी के मुद्दे पर इंडिया गठबंधन के घटक दल समाजवादी पार्टी और टीएमसी कांग्रेस से अलग अपना रुख दिखाते हुए आम सहमति नहीं बना पा रहे हैं। वैसे भी ये दोनों दल ही 66 सांसदों के साथ गठबंधन के मजबूत आधार है।

निश्चित रूप से कांग्रेस के मुद्दों से इंडिया गठबंधन के सहयोगी दल ही कांग्रेस से दूरी बना रहे हैं। भाजपा जब कांग्रेस से मुकाबले में होती है तब उसका प्रदर्शन सबसे अच्छा रहता है। जबकि क्षेत्रीय नेताओं के मुकाबले राहुल का जादू फीका प?ता है। इसके उदाहरण हैं झारखंड के हेमंत सोरेन का शानदार प्रदर्शन और बंगाल की ममता बनर्जी जिन्होंने उपचुनाव में सारी सीटें जीत ली। हरियाणा विधानसभा चुनावों में हमने देखा कि इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की बातचीत टूटने के बाद से कांग्रेस के जीत के सपनों को सेंध लगी थी और वहां भाजपा ने शानदार जीत हासिल करते हुए सरकार बनाने में कामयाब रही। महाराष्ट्र में भी इंडिया गठबंधन का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। आप ने तो कांग्रेस से दूरी बनायी ही है, अन्य दल भी दूरियां बना रहे हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले ही कांग्रेस एवं आप के बीच सहमति नहीं पायी है। आप ने समझ लिया है कि गठबंधन से कांग्रेस को ही फायदा अधिक होता है। इस तरह गठबंधन के टूटन से भाजपा की निराशा के बादल कुछ सीमा तक पहले भी छंटते हुए दिखाई दिये हैं और दिल्ली में ही ऐसा होता हुआ दिख रहा है। कांग्रेस, आप एवं भाजपा के त्रिकोणीय संघर्ष का फायदा भाजपा को ही मिला है और आगे भी ऐसा ही होने की संभावनाएं है। महाराष्ट्र चुनाव में भी विपक्षी गठबंधन इंडिया बिखरा हुआ ही प्रतीत हुआ, सपा ने शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट से नाराजगी की बात कहते हुए महाविकास अघा?ी गुट से नाता तो?ा, भले इससे राज्य की सियासत पर असर न प?ा हो, लेकिन इसके गहरे राजनीतिक मायने हैं। इसी तरह, तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष और बंगाल की सीएम ममता बनर्जी का इंडिया को लीड करने की इच्छा जाहिर करना भी बहुत कुछ कहता है। इन दोनों की नाराजगी गठबंधन के नेतृत्व और इस तरह से सीधे कांग्रेस को लेकर है। विभिन्न राज्यों में जहां-जहां इंडिया गठबंधन दलों की सरकारें हैं, वे अडाणी जैसे मुद्दों से दूरी बनाना चाहते हैं। ममता बनर्जी ने जिस तरह यह कहा कि उनका दल कांग्रेस की ओर से उठाए गए किसी एक मुद्दे को प्राथमिकता नहीं देगा, उससे यही संकेत मिला कि वह नहीं चाहतीं कि अदाणी मामले को तूल दिया जाए। कांग्रेस को इसकी भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि गत दिवस ही माकपा के नेतृत्व वाली केरल सरकार ने बंदरगाह के विकास के लिए अदाणी समूह के साथ एक पूरक समझौते को अंतिम रूप दिया। साफ है कि माकपा भी अदाणी मामले में कांग्रेस के रुख से सहमत नहीं। तेलंगाना सरकार ने अदाणी समूह के साथ एक समझौता कर रखा है और अतीत में राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने भी राज्य में इस समूह के निवेश को हरी झंडी दी थी। आखिर राहुल गांधी इन स्थितियों को क्यों नहीं समझ एवं देख रहे हैं?

अंतर्राष्ट्रीय

डोनाल्ड ट्रंप बढ़ाएंगे टैरिफ, भारत का क्या होगा

अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने धमकी दी है कि यदि ब्रिक्स देश अपनी अलग मुद्रा बनाने का प्रयास करते हैं, तो सभी सदस्य मुल्कों पर 100 प्रतिशत आयात कर लगा दिया जाएगा। यह धमकी निष्प्रभावी है, क्योंकि ब्रिक्स देशों द्वारा एक अलग मुद्रा बनाना संभव नहीं। यूरोपीय यूनियन ने साझा मुद्रा यूरो बनाने के साथ-साथ सभी देशों के नागरिकों को एक दूसरे के यहां जाकर काम करने की छूट भी दी थी। ब्रिक्स के सदस्य- भारत, चीन, रूस, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और दूसरे देश इस तरह की छूट नहीं देंगे। ऐसे में अलग करंसी नहीं बनाई जा सकती। इसके बाद भी ट्रंप द्वारा आयात कर बढ़ाने की बात गंभीर है। ट्रंप ने भारत को आयात कर का राजा बताया है और मेक्सिको व कनाडा पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की बात कही है। याद करें, ट्रंप के पिछले दौर में भारत के कई सामान को जनरल सिस्टम ऑफ प्रिफरेंसेस से हटा लिया गया था। इसके तहत, बिना आयात कर दिए अमेरिका में प्रवेश की छूट थी। नए कार्यकाल में ट्रंप निश्चित तौर पर सभी देशों पर इंपोर्ट टैक्स बढ़ाएंगे, ताकि अमेरिका में घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिले। ट्रंप के इस कदम का भारत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। हमारे आईटी, दवा, कप? और जूते जैसे निर्यात प्रभावित होंगे। ॥1क्क वीजा में कटौती से भारतीय नागरिकों के लिए अमेरिका में काम करना कठिन हो जाएगा। उनके द्वारा भारत को रेमिटेंस कम भेजी जाएगी। ट्रंप द्वारा अमेरिकी कंपनियों को अमेरिका में ही उद्योग लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके कारण विश्व की पूंजी का अमेरिका की तरफ पलायन होगा। इन तथ्यों को देखते हुए यूनियन बैंक ऑफ स्विट्जरलैंड ने अनुमान लगाया है कि ट्रंप के कदमों के कारण भारत की विकास दर में 0.5 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। कयास लगाया जा रहा है कि ट्रंप के निशाने पर मुख्य रूप से चीन और रूस हैं, भारत नहीं। सामरिक दृष्टि से यह बात सही है। भारत मूल रूप से अमेरिका के साथ है। ट्रंप के निशाने पर चीन इसलिए है क्योंकि वह भारी मात्रा में अमेरिका को माल का निर्यात करता है। इससे अमेरिकी उद्योग ठंडे पड़े हुए हैं। ट्रंप को सामरिक समस्या कम और सभी देशों से होने वाले आयातों से समस्या ज्यादा है। इसलिए ऐसा सोचना सही नहीं कि ट्रंप, चीन पर इंपोर्ट टैक्स बढ़ाएंगे, जबकि भारत को छोड़ देंगे। ट्रंप का मूल उद्देश्य अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है और इस हिसाब से भारत व चीन एक बराबर हैं। ट्रंप की पॉलिसी विदेशी व्यापार के सिद्धांत के विपरीत है और टिकाऊ नहीं होगी। विदेशी व्यापार इसलिए किया जाता है कि जो देश जो माल सस्ता बना सकता है, उसका उत्पादन करे और दूसरे उससे खरीदें। जैसे- भारत में बासमती चावल का उत्पादन सस्ता है, जबकि अमेरिका में अखरोट का। ऐसे में भारत चावल भेजे और अमेरिका अखरोट। ऐसे दोनों देशों के नागरिकों को सस्ता सामान मिल जाएगा।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

देवर्षीणाम् च नारद:।

नारद जी वस्तुत: सही मायनों में देवर्षि हैं

नारद मुनि, हिन्दू शास्त्रों के अनुसार, ब्रह्मा के छ: पुत्रों में से छठे है। उन्होने कठिन तपस्या से ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया। वे भगवान विष्णु के अनन्य भक्तों में से एक माने जाते है। देवर्षि नारद धर्म के प्रचार तथा लोक-कल्याण हेतु सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। शास्त्रों में इन्हें भगवान का मन कहा गया है। इसी कारण सभी युगों में, सभी लोकों में, समस्त विद्याओं में, समाज के सभी वर्गों में नारद जी का सदा से एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मात्र देवताओं ने ही नहीं, वरन् दानवों ने भी उन्हें सदैव आदर किया है। समय-समय पर सभी ने उनसे परामर्श लिया है। श्रीमद्भगवद्गीता के दशम अध्याय के 26वें श्लोक में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है - देवर्षीणाम् च नारद:। देवर्षियों में मैं नारद हूं। श्रीमद्भागवत महापुराण का कथन है, सृष्टि में भगवान ने देवर्षि नारद के रूप में तीसरा अवतार ग्रहण किया और सात्वततंत्र (जिसे नारद-पांचरात्र भी कहते हैं) का उपदेश दिया जिसमें सत्कर्मों के द्वारा भव-बंधन से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया है। नारद जी मुनियों के देवता थे और इस प्रकार, उन्हें ऋषिराज के नाम से भी जाना जाता था।

वायुपुराण में देवर्षि के पद और लक्षण का वर्णन है- देवलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले ऋषिगण देवर्षि नाम से जाने जाते हैं। भूत, वर्तमान एवं भविष्य-तीनों कालों के ज्ञाता, सत्यभाषी, स्वयं का साक्षात्कार करके स्वयं में सम्बद्ध, कठोर तपस्या से लोकविख्यात, गर्भावस्था में ही अज्ञान रूपी अंधकार के नष्ट हो जाने से जिनमें ज्ञान का प्रकाश हो चुका है, ऐसे मंत्रवेत्ता तथा अपने ऐश्वर्य (सिद्धियों) के बल से सब लोकों में सर्वत्र पहुँचने में सक्षम, मंत्रणा हेतु मनीषियों से घिरे हुए देवता, द्विज और नृपदेवर्षि कहे जाते हैं।इसी पुराण में आगे लिखा है कि धर्म, पुलस्त्य, क्रतु, पुलह, प्रत्यूष, प्रभास और कश्यप - इनके पुत्रों को देवर्षि का पद प्राप्त हुआ। धर्म के पुत्र नर एवं नारायण, क्रतु के पुत्र बालखिल्यगण, पुलह के पुत्र कर्दम, पुलस्त्य के पुत्र कुबेर, प्रत्यूष के पुत्र अचल, कश्यप के पुत्र नारद और पर्वत देवर्षि माने गए, किंतु जनसाधारण देवर्षि के रूप में केवल नारद जी को ही जानता है। उनकी जैसी प्रसिद्धि किसी और को नहीं मिली। वायुपुराण में बताए गए देवर्षि के सारे लक्षण नारदजी में पूर्णतय्घटित होते हैं। देवर्षि नारद वेद और उपनिषदों के मर्मज्ञ, देवताओं के पूज्य, इतिहास-पुराणों के विशेषज्ञ, पूर्व कल्पों (अतीत) की बातों को जानने वाले, न्याय एवं धर्म के तत्वज्ञ, शिक्षा, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान, संगीत-विशारद, प्रभावशाली वक्ता, मेधावी, नीतिज्ञ, कवि, महापण्डित, बृहस्पति जैसे महाविद्वानों की शंकाओं का समाधान करने वाले, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के यथार्थ के ज्ञाता, योगबल से समस्त लोकों के समाचार जान सकने में समर्थ, सांख्य एवं योग के सम्पूर्ण रहस्य को जानने वाले, देवताओं-दैत्यों को वैराग्य के उपदेशक, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य में भेद करने में दक्ष, समस्त शास्त्रों में प्रवीण, सद्गुणों के भण्डार, सदाचार के आधार, आनंद के सागर, परम तेजस्वी, सभी विद्याओं में निपुण, सबके हितकारी और सर्वत्र गति वाले हैं। अट्ठारह महापुराणों में एक नारदोक्त पुराण; बृहन्नारदीय पुराण के नाम से प्रख्यात है। मत्स्यपुराण में वर्णित है कि श्री नारद जी ने बृहत्कल्प-प्रसंग में जिन अनेक धर्म-आख्यायिकाओं को कहा है, 25,000 श्लोकों का वह महाग्रन्थ ही नारद महापुराण है। वर्तमान समय में उपलब्ध नारदपुराण 22,000 श्लोकों वाला है। 3,000 श्लोकों की न्यूनता प्राचीन पाण्डुलिपि का कुछ भाग नष्ट हो जाने के कारण हुई है। नारदपुराण में लगभग 750 श्लोक ज्योतिषशास्त्र पर हैं। इनमें ज्योतिष के तीनों स्कन्ध-सिद्धांत, होरा और संहिता की सर्वांगीण विवेचना की गई है। नारदसंहिता के नाम से उपलब्ध इनके एक अन्य ग्रन्थ में भी ज्योतिषशास्त्र के सभी विषयों का सुविस्तृत वर्णन मिलता है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि देवर्षिनारद भक्ति के साथ-साथ ज्योतिष के भी प्रधान आचार्य हैं। आजकल धार्मिक चलचित्रों और धारावाहिकों में नारद जी का जैसा चरित्र-चित्रण हो रहा है, वह देवर्षि की महानता के सामने एकदम बौना है।

आध्यात्मिक लेख

जो यम-नियम की डगर पर चलने की कोशिश करते हैं, वे इस संतुलन को अनायास ही साध लेते हैं। उन्हें बाहरी घटनाक्रमों से कोई उद्विग्नता नहीं होती। किसी भी पारस्थिति से न तो वे स्वयं विक्षुब्ध होते हैं और न ही,औरों को विक्षुब्ध करते हैं।

अंतर्माया विज्ञान की योगविद्या की समूची संरचना है

अंतर्माया विज्ञान के प्रयोग योग साधक को धीरे-धीरे अंतर्माया पथ पर गतिशील करते हैं। इस गति की तीव्रता व निरन्तरता के लिए ही अंतर्माया विज्ञान की योगविद्या की समूची संरचना है। इसी के लिए इसके आठ चरण हैं। इनमें से पहले पांच चरण बहिरंग हैं और बाद के तीन अंतरग हैं। इन दोनों की ही अपनी उपयोगिता, भूमिका व महत्व है। बहिरंग चारों में पहले दो यम नियम जीवन की प्रक्रिया व गतिविधि को देश-काल व समाज तथा परिस्थितियों के साथ समायोजित करते हैं। सामान्य क्रम में यह नहीं पता। रह-रह कर जीवन का संकुलन देश व काल से समाज व परिस्थितियों से बिगड़ता रहता है।

लेकिन जो यम-नियम की डगर पर चलने की कोशिश करते हैं, वे इस संतुलन को अनायास ही साध लेते हैं। उन्हें बाहरी घटनाक्रमों से कोई उद्विग्नता नहीं होती। किसी भी पारस्थिति से न तो वे स्वयं विक्षुब्ध होते हैं और न ही,औरों को विक्षुब्ध करते हैं। यम-नियम की व्याख्याएं कितनी ही विस्तृत क्यों न की जाती रहे, परन्तु इनका सारभूत परिणाम यही है, उद्वेग रहित विक्षोभ रहित जीवन फिर भी बाहरी परिस्थितियाँ कैसी भी और कितनी भी जटिल, कठिन क्यों न हों। इसी तरह आसन-प्राणायाम व प्रत्याहार की आवश्यकता, दृढ़ शरीर व मजबूत मन के लिए है, जो अंतर्माया पथ पर चलना चाहते हैं, उनके लिए इसकी अनिवार्यता है।

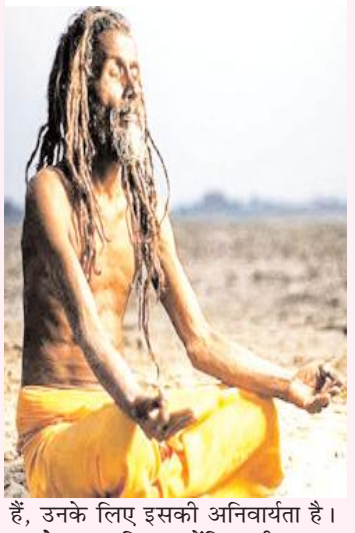

ऐसा इसलिए क्योंकि शरीर व मन का वह आधार है, जिनके बलबूते प्रारब्ध कर्म का क्षरण व क्षय होता है। यदि इनकी दृढ़ता में संशय है तो ये भाग-साधना में सहायक व सहयोगी होने के बजाए बाधक व विरोधी बन जाते हैं। इसलिए स्वस्थ शरीर व स्वच्छ मन अंतर्माया पथ की मूलभूत आवश्यकता है। ऐसा होने पर ही बहिर्मुखी चेतना अंतर्मन के लिए प्रेरित व प्रवर्तित होती है। इस तरह योगा के पहले पांच चरण योग-साधना की प्राथमिक एवं बाहरी आवश्यकता पूरी करने के कारण बहारी या बहिरंग कहे जाते हैं। इसके बाद के तीन चरण धारणा-ध्यान-समाधि-को अतरंग कहा जाता है। क्योंकि ये अंतश्चेतना व अंत:प्रकृति को प्रभावित परिशोधित, परिष्कृत व प्रकाशित करते हैं।

इस स्थिति की चर्चा इसी योगकथा में समाहित है। इसमें कहा गया था कि धारणा-ध्यान और समाधि तीनों मिलकर 'संयम' की सृष्टि करते हैं। यह अपनी प्रक्रिया व परिणाम में आश्चर्यकारी है। क्योंकि जहां भी संयम किया जाता है तो स्वभावत: उसके सत्य का सम्यक ज्ञान एवं उसकी शक्तियाँ हासिल हो जाती हैं। योग सूत्रकार ऋषि पतंजलि का कहना है कि संयम को चरण दर चरण संयोजित करना चाहिए। पहले स्थूल विषयों, बाद में सूक्ष्म व सूक्ष्मतर विषयों पर संयम करने से योगी विभूतियों का अधिकारी बनता है। इसके अगले सूत्र में महर्षि पतंजलि इन तीनों चरणों के अंतरंग होने की बात कहते हैं।

भयमन्तरङ्ग पूर्वेभ्य।। शब्दार्थ- पूवेभ्य:, पहले कहे हुओं की अपेक्षा भयम्, ये तीनों (साधन), अंतरङ्ग, अंतरग हैं।

भावार्थ-धारणा, ध्यान व समाधि के तीनों चरण पहले के पाँच चरणों की अपेक्षा आंतरिक हैं।